

देवा

285XVIII

पैरोसर राव द्वारा नामान्तर-
 करण से 1883 प्रकृत करण
 पर पत्रावली पेशी में ली
 गयी. शामिल हो. नामान्तर-
 करण के अनुसार इस याया-
 लय द्वारा भारत निर्णय की
 पलनी की न्याय की है. उपर
 पत्रावली नुस्खी पर की जाती
 है. पत्रावली दा केरा पत्रिका
 के क्रम से क्रम की जाकर
 निर्णय की खाति में शामिल
 है.

देवा

इति रीति हो